

जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 26 जुलाई 2020

**कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान भारत में घरेलू हिंसा बढ़ी: जामिया में आयोजित वेबिनार में
जेन्डर विशेषज्ञों ने बताया**

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वर्क ने 25 जुलाई, 2020 को, जामिया शताब्दी समारोह श्रृंखला के तहत 'कोविड-19 महामारी के हालात के दौरान घरेलू हिंसा बढ़ने और समाधान' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार का मकसद सोशल वर्क के परिप्रेक्ष्य में लिंग आधारित हिंसा (घरेलू हिंसा के लिए विशेष संदर्भ) को समझना और उसके समाधान के सुझाव देना था।

वेबिनार के दो प्रमुख वक्ता, ग्लोबल एडवोकेसी, ब्रेकथ्रू इंडिया की डायरेक्टर, डॉ उर्वशी गांधी, और यूएन वूमन, ईवीएडब्ल्यू कंसल्टेंट, डॉ संघमित्रा धर ने कोविड- 19 लॉकडाउन के दौरान भारत में घरेलू हिंसा की स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के हालात में ऐसी परिस्थितियां बनी हैं जहां महिलाओं को अपने घरों में उन्हीं लोगों के साथ सारे समय रहना पड़ रहा है जो उन्हें प्रताड़ित करते हैं। इन हालात में, घरेलू हिंसा के मामलों में दो गुना वृद्धि हुई है, क्योंकि सोशल डिस्टेंसिंग की वजह से उन्हें इस हिंसा से बचाव के लिए मदद भी नहीं मिल पा रही है। वन स्टॉप क्राइसिस सेंटर भी सभी राज्यों में या जिलों में उपलब्ध नहीं हैं और हैं भी दूर होने के कारण प्रताड़ित महिलाएं उनकी मदद नहीं ले पा रही हैं।

वक्ताओं ने सीएसओ और सरकार द्वारा महिलाओं को प्रदान की जाने वाली सहायता सेवाओं के बारे बताया। इन रिसोर्स पर्सन्स ने लॉकडाउन के दौरान घरेलू हिंसा की समस्या से निपटने के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी कुछ रास्ते और विकल्प बताए। उन्होंने उन मानदंडों को चुनौती देने की आवश्यकता जताई, जिसमें परिवार के भीतर हिंसा को सामान्य बात माना जाता है। इन संकटपूर्ण हालात में, घरेलू हिंसा की शिकार हो रही महिलाओं तक, उससे बचने के सभी कानूनी और अन्य सहायता की जानकारी मुहैया कराया जाना ज़रूरी है। इसमें सामाजिक कार्यकर्ताओं और मीडिया को अहम भूमिका निभानी चाहिए।

विभागाध्यक्ष प्रो अर्चना दस्सी द्वारा स्वागत भाषण के साथ वेबिनार की शुरुआत हुई, जिसमें उन्होंने मुख्य अतिथि और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रो दस्सी ने इस तथ्य पर

प्रकाश डाला कि कोविड- महामारी ने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों पर अतिरिक्त दबावों की सुनामी ला दी है। इसे काबू करने के सभी प्रयास हो रहे हैं लेकिन कोविड-19 का महिलाओं पर घरेलू हिंसा का जो अतिरिक्त दबाव बना है, उसे हल करने के बारे में भी गंभीरता से सोचने और कुछ करने की ज़रूरत है। भारत के राष्ट्रीय महिला आयोग ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि देश में लाकडाउन के दौरान लिंग आधारित हिंसा में दो गुना से अधिक की बढ़ोतरी हुई है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की कुलपति प्रो नजमा अख्तर ने इस वेबिनार का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि इस लाकडाउन के दौरान, कई महिलाओं पर घरेलू हिंसा का खतरा बढ़ गया है क्योंकि उन्हें इन हालात में अपने साथ दुर्व्यवहार करने वालों के साथ ही घर पर रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों का एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा भी है। लैंगिक समानता के महत्व के बारे में कम उम्र से भारतीय बच्चों को शिक्षित करना घरेलू हिंसा को खत्म करने में एक सार्थक शुरुआत हो सकती है। प्रोफेसर अख्तर ने इस तथ्य पर जोर दिया कि समाज में समानता लाने के लिए लोगों के नज़रिए में एक बड़े बदलाव की ज़रूरत है।

वेबिनार में 140 लोगों ने हिस्सेदारी की जिसमें देश भर के नागरिक समाज संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वालों सहित शोधकर्ता और छात्र शामिल हैं। प्रतिभागियों ने, प्रश्नोत्तर सत्र में घरेलू हिंसा समाप्त करने के उपायों को लेकर समाज, सरकार और सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका के बारे में वक्ताओं से कई सवाल किए।

वेबिनार का समापन, कुलपति के मार्गदर्शन और समर्थन के लिए उनका, वक्ताओं का और सभी गणमान्य व्यक्तियों तथा इसमें हिस्सा लेने वालों का धन्यवाद करने से साथ हुआ। इस महामारी के हालात पर इतने महत्वपूर्ण मुद्दे चर्चा करने और उसका समाधान खोजने के प्रयासों की काफी सराहना की हुई।

अहमद अज़ीम

जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक